ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in May 2025

भूमि उपयोग के बदलते स्वरूप का भौगोलिक अध्ययन श्री गंगानगर के सन्दर्भ में

सुनिता भाटी, शोधार्थी, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलिबंगा, हनुमानगढ़
डॉ. जयदेव प्रसाद शर्मा, सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलिबंगा, हनुमानगढ़

परिचयात्मक शोध की भूमिका

श्रीगंगानगर जिले का भूमि उपयोग समय के साथ विभिन्न बदलावों से गुजरा है, जो इसकी भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। पहले यह क्षेत्र मुख्य रूप से रेगिस्तानी और कृषि प्रधान था, जहाँ परंपरागत रूप से सिंचित कृषि कार्य किए जाते थे। मगर, 20वीं सदी के मध्य में इरिगेशन परियोजनाओं जैसे राजस्थान नहर प्रणाली के कारण यहां की कृषि भूमि में बदलाव आया। इससे पहले केवल वर्षा पर निर्भर रहने वाली भूमि अब सिंचाई से समृद्ध हो गई, और इस क्षेत्र में गेहूं, बाजरा, चावल, कपास जैसी उच्च–उत्पादन वाली फसलों की खेती बढ़ी। इसके परिणामस्वरूप, श्रीगंगानगर की भूमि उपयोग संरचना में कृषि का महत्व बढ़ा।

साथ ही, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने भी भूमि उपयोग में बदलाव किए। पहले ग्रामीण क्षेत्र होने के बावजूद, अब यह क्षेत्र शहरी विस्तार और कच्चे और तैयार माल के उद्योगों का भी हिस्सा बन गया है। भूमि के अन्य उपयोग जैसे आवासीय और वाणिज्यिक विकास ने भी इसकी संरचना को प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन और सीमित जल संसाधनों ने कृषि भूमि के उपयोग को प्रभावित किया है, जिससे खेती की परंपरागत विधियों में बदलाव आया है। इन सभी बदलावों का समग्र प्रभाव श्रीगंगानगर के भौगोलिक परिपेक्ष्य में देखा जा सकता है, जो कृषि और शहरीकरण के बीच संतुलन बनाने की चुनौती को दिखाता है। इस प्रकार, श्रीगंगानगर में भूमि उपयोग के बदलते स्वरूप ने न केवल कृषि उत्पादन को प्रभावित किया, बल्कि सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं को भी नया आकार दिया है। इसके अतिरिक्त, श्रीगंगानगर में जल संसाधनों की उपलब्धता और प्रबंधन ने भूमि उपयोग के रूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं। विशेष रूप से सिंचाई के लिए नहरों का उपयोग बढ़ने से कृषि भूमि में विस्तार हुआ, लेकिन जल की अत्यधिक मांग और सीमित जल स्रोतों की समस्या ने दीर्घकालिक कृषि योजनाओं पर असर डाला है। जल संकट और अधिक सिंचाई के कारण भूमि की उर्वरता में कमी, जल स्तर में गिरावट और मृदा की क्षरण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। इन समस्याओं का समाधान खोजने के लिए भूमि उपयोग की नीति में बदलाव की आवश्यकता है, जिससे सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

शहरीकरण के प्रभाव के कारण, श्रीगंगानगर में भूमि उपयोग के बदलते स्वरूप ने सामाजिक संरचनाओं में भी बदलाव किया है। शहरों का विस्तार, औद्योगिकीकरण, और बुनियादी ढांचे के विकास ने नए आवासीय क्षेत्र, वाणिज्यिक परिसर, और औद्योगिक पार्कों की स्थापना को बढ़ावा दिया है। इससे ग्रामीण–शहरी भेदभाव में कमी आई है और ग्रामीण इलाकों से शहरों की ओर प्रवासन की प्रवृत्ति बढ़ी है। यह बदलाव क्षेत्रीय विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है, लेकिन इसने भूमि के अन्य उपयोगों, जैसे कृषि भूमि के कटाव और प्राकृतिक संसाधनों की कमी, को भी जन्म दिया है।

अंततः, श्रीगंगानगर में भूमि उपयोग के बदलते स्वरूप ने क्षेत्रीय विकास के साथ–साथ पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना भी किया है। यह अध्ययन यह दर्शाता है कि भूमि उपयोग में बदलाव केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। ऐसे में, भूमि उपयोग नीति में बदलाव, सतत कृषि तकनीकों को अपनाने, और जल प्रबंधन के बेहतर उपायों को लागू करने की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में इस क्षेत्र की भूमि उपयोग की संरचना टिकाऊ और संतुलित बनी रहे।

श्रीगंगानगर में भूमि उपयोग के बदलते स्वरूप पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह देखा जा सकता है कि कृषि के क्षेत्र में आधुनिक तकनीकों और मशीनरी का उपयोग बढ़ा है। ट्रैक्टर, सिंचाई उपकरण, और उच्च गुणवत्ता वाली बीजों का उपयोग कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए किया गया है, जिससे कृषि भूमि की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। हालांकि, इन बदलावों के साथ–साथ पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ भी धीरे–धीरे समाप्त हो रही हैं, जो एक सांस्कृतिक और पारिस्थितिकी समस्या का कारण बन सकती हैं। पुराने समय में, श्रीगंगानगर में कृषि कार्य एक सामूहिक और पारिवारिक गतिविधि होती थी, लेकिन अब आधुनिक कृषि तकनीक और व्यावसायिक दृष्टिकोण के कारण इस परंपरा में बदलाव आ गया है।

इसके अलावा, भूमि उपयोग के इस बदलते स्वरूप में पर्यावरणीय दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अत्यधिक कृषि गतिविधियाँ और शहरी विस्तार प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव डाल रहे

हैं। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, जल निकासी की व्यवस्था का अभाव और मृदा अपरदन जैसे पर्यावरणीय प्रभाव बढ़े हैं। यह न केवल पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि ग्रामीण इलाकों में कृषि भूमि के घटने से खाद्य सुरक्षा भी प्रभावित हो रही है। इन पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए भूमि संरक्षण, जल पुनर्चक्रण और जैविक खेती जैसी योजनाओं की आवश्यकता है, जो भूमि उपयोग को अधिक टिकाऊ बना सकें।

परिचयात्मक शोध के सोपान

वर्तमान में सीमित भूमि पर बढ़ते जनसंख्या भार की समस्या बढ़ती जा रही है। आज भूमि पर बढ़ते जनभार को भोजन प्रदान करने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि भूमि से अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जाए। इसलिए भूमि का विभाजन इस दृष्टि से किया जाए कि भूमि की सम्भावित क्षमता के अनुरूप उसका सर्वोत्तम उपयोग हो सके। मनुष्य कृषि अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उर्वरकों का अधांधुध प्रयोग कर रहा है। यूं तो रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने से कृषि उत्पावन में वृद्धि होती है, परन्तु इसका एक हानिकारक पहलू है मिट्टियों में क्षारीयता व लवणता में तेजी से वृद्धि होती है, जिस कारण लगातार मृदा गुणवता में ह्रास हो रहा है।

परिचयात्मक शोध का महत्त्व

भूमि एक ससाधन है और संसाधनों का आधारभूत स्रोत भी। भूमि वह स्थान हैं जहां मानव जाति, जीव–जन्तु, वनस्पति स्वयं में तथा आपस में क्रियाएं तथा प्रतिक्रियाएं करते हैं और एक विशेष प्रकार का पर्यावरण विकसित करते हैं। भूमि, संसाधन की वह तस्वीर है जो किसी देश, प्रदेश या क्षेत्र विशेष के विकास में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं और वहां पर विकसित भौतिक तथा सांस्कृतिक दृश्यावली का निर्माण करती हैं और समय के साथ–साथ परिवर्तनशीलता का रूप भी प्रदान करती है। वास्तव में भूमि और भूमि उपयोग कार्यत्मकता के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं।

इस प्रकार किसी देश–प्रदेश व क्षेत्र की भूमि उस क्षेत्र विशेष की दृश्यभूमि को प्रदर्शित करती है और भूमि प्रयोग भूमि उपयोग तथा भूमि ससाधन के रूप में प्रयोग उस क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस प्रयोगमें समय के साथ–साथ परिवर्तनशीलता के गुण होने के कारण उस क्षेत्र की प्राकृतिक भौतिक तथा आर्थिक दशाओं में परिवर्तन होता है।

इसी परिवर्तन के अध्ययन को ध्यान में रखते हुए श्री गंगानगर शहर में भूमि उपयोग के स्वरूप रूप को जानने का प्रयत्न किया जा रहा है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किस स्तर का भूमि उपयोग किया जा रहा है। इस तथ्य को जानने के लिए शोध को प्रस्तुत किया जा रहा है।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

1. भूमि संसाधन उपयोग की आवश्यकता तथा उसके अनुकूलतम उपयोग में निर्धारण करना।
2. भूमि के उपयोग में मांग के आधार पर लाभदायक सामंजस्य स्थापित करना।
3. आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण ढंग से अतिशय विदोहन व शोषण को रोकना।

परिचयात्मक शोध का निष्कर्ष

किसी देश–प्रदेश व क्षेत्र की भूमि उस क्षेत्र विशेष की दृश्यभूमि को प्रदर्शित करती है और भूमि प्रयोग भूमि उपयोग तथा भूमि ससाधन के रूप में प्रयोग उस क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस प्रयोगमें समय के साथ–साथ परिवर्तनशीलता के गुण होने के कारण उस क्षेत्र की प्राकृतिक भौतिक तथा आर्थिक दशाओं में परिवर्तन होता है।

इसी परिवर्तन के अध्ययन को ध्यान में रखते हुए श्री गंगानगर शहर में भूमि उपयोग के स्वरूप रूप को जानने का प्रयत्न किया जा रहा है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किस स्तर का भूमि उपयोग किया जा रहा है। इस तथ्य को जानने के लिए शोध को प्रस्तुत किया जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एके तिवारी (2007): राजस्थान का प्रादेशिक भूगोल राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
2. अरूण शहरिया (1991) :शहरी वातावरण का अपघटन, लघु शोधप्रबन्ध, राज. वि., जयपुर
3. बी एन. सिंह,आर.सी. तिवारी (1999):कृषि भूगोल प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद
4. भंवर सिंह राठौड़ (2008):कृषि अंकतालिका भू–अभिलेख शाखा, कलैक्ट्रेट, श्रीगंगानगर
5. ब्रजभूषण सिंह(1979): कृषि भूगोल तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी
6. चन्दन सिंह शेखावत (2009): सामान्य भूगोल पिंकसिटी पब्लिशर्स, जयपुर